विचार बिन्दु

जब तक आशा लगी है, तब तक एकाग्रता नहीं हो सकती। – रामतीर्थ

ऋतुराज : केंद्र से दूर फिर भी साहित्य के केंद्र में!

किसी लेखक की प्रतिष्ठा कैसे बनती है? क्या इसके लिए जरूरी है कि वह साहित्यिक आयोजनों में लगातार दिखाई दे, दूसरे लेखकों-आलोचकों से संपर्क बनाए रखे, अपनी उपस्थिति दर्ज कराता रहे, अपने लेखन और उपलब्धियों की चर्चा करता और करवाता रहे? क्या पुरस्कारों और सम्मानों की दुनिया में जगह बनाने के लिए कुछ अतिरिक्त सक्रियता, कुछ जोड़-तोड़ और कुछ आत्मप्रचार भी जरूरी है? हिंदी साहित्य की दुनिया में इन सवालों के जवाब तलाशने निकलें तो कई दिलचस्प निष्कर्ष सामने आ सकते हैं। लेकिन हाल में दिवंगत हुए वरिष्ठ कवि ऋतुराज का जीवन इन प्रचलित धारणाओं के बरक्स एक अलग ही तस्वीर प्रस्तुत करता है।

ऋतुराज हमारे समय के महत्त्वपूर्ण कवि थे। उनकी कविता की अपनी पहचान थी और साहित्यिक दुनिया में उनका सम्मान भी खूब था। लेकिन अपने व्यक्तित्व और व्यवहार में वे उन लेखकों से बिल्कुल अलग थे जो लगातार साहित्यिक गतिविधियों के केंद्र में बने रहना चाहते हैं। वे अपनी छोटी-सी दुनिया में सिमटे रहने वाले व्यक्ति थे। न कहीं बहुत आना-जाना, न लोगों से मिलने-जुलने की विशेष उत्सुकता। फ़ोन करना तो दूर, फ़ोन उठाने से भी उन्हें परहेज था। उनके साक्षात्कार भी उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। अपने बारे में बात करना, अपनी उपलब्धियों का बखान करना या साहित्यिक दुनिया में अपनी उपस्थिति का अहसास कराते रहना उनके स्वभाव में नहीं था। 2023 में बया पत्रिका ने ऋतुराज: 'रचनात्मकता के छह दशक' शीर्षक से एक विशेषांक निकाला था। पत्रिका के संपादक गौरीनाथ ने भूमिका में लिखा है: ऋतुराज जी के सहयोग की बात करूं तो वे लगातार अंक निकालने से रोकते ही रहे। दस बार फ़ोन करने पर एक बार उठाते और ऊपर से यह सलाह देते कि क्यों अपना समय बर्बाद कर रहे हो!"

यह सब किसी बनावटी विनम्रता या प्रचार से बचने के लिए अपनाई गई रणनीति का हिस्सा नहीं था। यह उनका सहज स्वभाव था। वे जैसे थे, वैसे ही रहे। साहित्यिक आयोजनों में उनकी अनुपस्थिति को उनकी साहित्यिक उदासीनता नहीं माना जाना चाहिए। वे अपने समय और समाज से पूरी तरह जुड़े हुए कवि थे। उनकी कविता में आम आदमी का जीवन, सामाजिक विषमताएं, स्त्री की स्थिति और हाशिए पर खड़े लोगों की पीड़ा जिस गहराई से व्यक्त हुई है, वह इस बात का प्रमाण है कि उनका एकांत उन्हें अपने आसपास की दुनिया से काटता नहीं था। वे दुनिया को देखते थे, समझते थे और अपनी कविता में उसका साक्ष्य प्रस्तुत करते थे।

ऋतुराज के जीवन का एक दिलचस्प पहलू उनका भौगोलिक चुनाव भी है। वे राजस्थान की कॉलेज शिक्षा सेवा में अंग्रेजी के प्राध्यापक थे। उन्होंने लगभग चार दशक तक अध्यापन किया। उस ज़माने में उनके लिए बड़े शहर में पदस्थापन प्राप्त करना कोई असंभव काम नहीं था। लेकिन उन्होंने प्रांत के किसी बड़े शहर में रहने की आकांक्षा नहीं पाली। उनकी नौकरी का बड़ा हिस्सा बूंदी जैसे छोटे कस्बे में बीता। सेवानिवृत्ति के बाद कुछ समय चीन में चाइना रेडियो इंटरनेशनल के साथ भाषा विशेषज्ञ के रूप में काम किया और फिर जयपुर आकर बस गए। लेकिन जयपुर में भी उनकी जीवनशैली में कोई बदलाव नहीं आया। साहित्यिक आयोजनों और सार्वजनिक गतिविधियों में उनकी उपस्थिति बहुत विरल रही।यह बात मुझे इसलिए ख़ास तौर पर याद आ रही है कि उनके तीये की बैठक से लौटते हुए एक वरिष्ठ साहित्यकार ने किंचित अफ़सोस के साथ कहा कि काश! ऋतुराज जी दिल्ली में रह रहे होते! निश्चय ही इस अफ़सोस में ऋतुराज जी के प्रति अनुराग और सद्भावना थी। दिल्ली हिंदी साहित्य का बड़ा केंद्र है। वहां प्रकाशक हैं, साहित्यिक संस्थान हैं, लेखक-संपादकों का जमावड़ा है, मीडिया है और पुरस्कारों-सम्मानों से जुड़ी गतिविधियों का एक पूरा तंत्र है। वहां रहने वाले लेखक की दृश्यता स्वाभाविक रूप से अधिक होती है। लेकिन ऋतुराज के संदर्भ में मैं सोचने लगता हूं कि क्या दिल्ली में रहने से उनका स्वभाव बदल जाता? शायद नहीं। वे वहां भी अपनी उसी छोटी-सी दुनिया में रहे होते। उन्हें बड़े शहर की चमक-दमक या साहित्यिक गतिविधियों के केंद्र में रहने की कोई आकांक्षा थी ही नहीं। वे जहां रहे, अपनी शर्तों पर रहे। दिल्ली में रहते तो भी ऐसे ही रहते!

ऋतुराज की कविता का संसार किसी छोटे दायरे में सीमित नहीं था। उनके यहां समाज के वंचित और उपेक्षित लोग हैं, स्त्रियों के जीवन के संघर्ष हैं, व्यवस्था की विसंगतियां हैं और मनुष्य की गरिमा से जुड़े सवाल हैं। उनकी कविता में जो बेचैनी और प्रतिरोध है, वह उनके निजी जीवन की चुप्पी से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। शायद यही उनकी विशेषता थी कि वे सार्वजनिक रूप से कम बोलते थे, लेकिन उनकी कविताएं बहुत कुछ कहती थीं।

यहां एक बात स्पष्ट करना जरूरी है। साहित्यिक संवाद, संपर्क और मेलजोल अपने आप में कोई बुरी बात नहीं है। लेखक भी सामाजिक प्राणी है। दूसरे लेखकों से मिलना, विचारों का आदान-प्रदान करना, आयोजनों में भाग लेना और अपने समय के साहित्यिक विमर्श से जुड़े रहना रचनात्मक जीवन को समृद्ध कर सकता है। लेकिन जब यह सब लेखक की रचनात्मकता से अधिक उसकी प्रतिष्ठा अर्जित करने का साधन बन जाए, तब सवाल पैदा होते हैं। ऋतुराज का उदाहरण इसीलिए महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने साहित्यिक दुनिया में अपनी जगह बनाने के लिए इन गतिविधियों को ज़रूरी नहीं माना।यह बात ग़ौरतलब है कि जिस साहित्यिक समाज में सायास अपनी उपस्थिति बनाए रखना भी एक योग्यता मान लिया गया हो वहां ऋतुराज ने अपनी अनुपस्थिति से ही अपनी उपस्थित दर्ज़ करा दी।

उनकी उपलब्धियों की सूची पर नजर डालें तो यह बात और स्पष्ट होती है। उनके कई कविता संठाह छपे और चर्चित हुए। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान मिले। इन सम्मानों का उल्लेख किसी उपलब्धि का हिसाब देने के लिए नहीं, बल्कि एक विरोधाभास को रेखांकित करने के लिए ज़रूरी है। जिस व्यक्ति ने पुरस्कारों और सम्मानों के लिए कभी कोई प्रयत्न नहीं किया, जिसे सामान्य मेलजोल और लोकाचार निभाने में भी खास दिलचस्पी नहीं थी, उसे साहित्यिक दुनिया ने पर्याप्त सम्मान दिया। उनके निधन के बाद सोशल मीडिया पर जिस आदर के साथ उन्हें स्मरण किया गया वह असाधारण था। यह सम्मान उनकी रचनाओं की ताकत और उनके साहित्यिक अवदान की स्वीकृति था। यह भी उल्लेखनीय है कि उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार नहीं मिला। लेकिन इस बात को लेकर उन्होंने कभी सार्वजनिक क्षोभ या मलाल व्यक्त नहीं किया। उनके कई प्रशंसकों और मित्रों को लगता रहा कि उन्हें कुछ और बड़े सम्मान मिलने चाहिए थे। दूसरों की यह शिकायत अपनी जगह है, लेकिन स्वयं ऋतुराज ने कभी इसे अपनी चिंता का विषय नहीं बनाया। उन्होंने न अपनी उपेक्षा का सोग मनायान किसी पुरस्कार के लिए अपनी दावेदारी जताई और न यह शिकायत की कि साहित्यिक दुनिया ने उन्हें पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया। याद रखा जाए कि ऋतुराज उसी हिंदी साहित्य समाज के एक सदस्य थे जहां लगभग हरेक रचनाकार को या/और उसके प्रशंसक को यह शिकायत रहती है कि जितने सम्मान के वे पात्र हैं उतना सम्मान उन्हें मिला नहीं।

इस प्रसंग में एक और बात ध्यान देने योग्य है। ऋतुराज की कविता का संसार किसी छोटे दायरे में सीमित नहीं था। उनके यहां समाज के वंचित और उपेक्षित लोग हैं, स्त्रियों के जीवन के संघर्ष हैं, व्यवस्था की विसंगतियां हैं और मनुष्य की गरिमा से जुड़े सवाल हैं। उनकी कविता में जो बेचैनी और प्रतिरोध है, वह उनके निजी जीवन की चुप्पी से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। शायद यही उनकी विशेषता थी कि वे सार्वजनिक रूप से कम बोलते थे, लेकिन उनकी कविताएं बहुत कुछ कहती थीं। अनायास ही शमशेर बहादुर सिंह याद आ जाते हैं: **बात बोलेगी, हम नहीं।/ भेद खोलेगी बात ही।**

ऋतुराज का उदाहरण देकर यह निष्कर्ष निकालना भी ठीक नहीं होगा कि लेखक को संपर्क नहीं रखने चाहिए, साहित्यिक आयोजनों में नहीं जाना चाहिए या पुरस्कारों की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। हर व्यक्ति का स्वभाव अलग होता है और हर लेखक अपनी तरह से अपना रास्ता बनाता है। लेकिन ऋतुराज का जीवन यह जरूर बताता है कि साहित्य में प्रतिष्ठा अर्जित करने का कोई एक तयशुदा फार्मूला नहीं है। बड़े शहर में रहना, हर जगह दिखाई देना, संपर्क का विस्तार करना और अपनी उपलब्धियों का प्रचार करना किसी लेखक की सफलता की अनिवार्य शर्तें नहीं हैं। उसी तरह पुरस्कार न मिलना या अपेक्षित सम्मान न मिलना किसी लेखक की रचनात्मक विफलता का प्रमाण नहीं है।

आज जब हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने, अपनी उपलब्धियों का प्रचार करने और दूसरों की तुलना में आगे दिखाई देने की होड़ बढ़ती जा रही है, ऋतुराज का जीवन एक अलग तरह का संदेश देता है। उन्होंने अपने लेखन को ही अपनी पहचान बनने दिया। न उन्होंने दुनिया से अपने लिए जगह मांगी, न जगह न मिलने की कभी शिकायत की। वे अपनी दुनिया में रहे, लेकिन उनकी कविता की दुनिया बहुत बड़ी थी। वे साहित्यिक गतिविधियों के केंद्र में भले न रहे हों, समकालीन हिंदी कविता के केंद्र में उनकी जगह बनी रही।

शायद किसी लेखक के लिए इससे बड़ी संतुष्टि और क्या हो सकती है कि उसके जाने के बाद भी उसकी रचनाएं पाठकों के बीच जीवित रहें। ऋतुराज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कविताएं हमारे पास हैं। और वे हमें याद दिलाती रहेंगी कि साहित्य में अंततः लेखक की स्थायी पहचान उसके संपर्क, प्रचार और शिकायतों से नहीं, उसके रचनात्मक अवदान से बनती है।

इस बड़े कवि को राष्ट्रदूत परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

फर्जी डिग्री की खेती : राजस्थान में कृषि शिक्षा का संकट और सुधार की उम्मीद



प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंठालिया

राजस्थान की धरती पर दो तरह की खेती हो रही है। एक खेतों में, जहाँ किसान पसीना बहाकर अन्न उगाता है; दूसरी कुछ शिक्षण संस्थानों की चारदीवारी में, जहाँ पर्याप्त पढ़ाई, प्रयोगशाला और प्रायोगिक प्रशिक्षण के बिना डिठियाँ बाँटने के आरोप सामने आ रहे हैं। पहली खेती देश का पेट भरती है, जबकि दूसरी विद्यार्थियों के भविष्य और कृषि शिक्षा की विश्वसनीयता को खतरे में डाल सकती है। कृषि शिक्षा में अनियमितताओं का यह प्रश्न अब राजस्थान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राष्ट्रीय बहस का विषय बन गया है।

14 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली में एठीविजन के दसवें राष्ट्रीय सम्मेलन में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्पष्ट किया कि निर्धारित मानकों के बिना तेजी से खुल रहे निजी कृषि महाविद्यालयों और फर्जी डिठियों के कारोबार पर सख्ती से रोक लगाई जाएगी।

उन्होंने घोषणा की कि कृषि शिक्षा के नियमन के लिए जल्द एग्रीकल्चर काउंसिल गठित की जाएगी। उनका संदेश साफ था कि केवल फीस लेकर डिग्रियाँ बाँटने वाले संस्थानों को चलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह घोषणा कृषि शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों के भविष्य की सुरक्षा की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

राजस्थान में इस समस्या की गंभीरता समझने के लिए जुलाई 2025 का मेवाड़ विश्वविद्यालय प्रकरण पर्याप्त संकेत देता है। चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्थित विश्वविद्यालय में कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने 29 जुलाई को औचक निरीक्षण किया था।मेवाड़ विश्वविद्यालय प्रकरण में सामने आई शिकायतें और भी गंभीर थीं। आरोप लगाए गए कि विद्यार्थियों को राजस्थान जॉइंट एंट्रेंस टेस्ट की निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया से हटकर सीधे प्रवेश दिए गए। यह भी शिकायत थी कि उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच कथित तौर पर महज दो घंटे में पूरी कर विद्यार्थियों को प्रथम श्रेणी तक प्रदान कर दी गई। इसके अलावा, डेयरी और कृषि डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के नाम पर विद्यार्थियों से लाखों रुपये फीस के रूप में वसूलने की शिकायतें भी सामने आईं। यह केवल प्रवेश और परीक्षा प्रक्रिया की अनियमितता का मामला नहीं है , बल्कि विद्यार्थियों के भविष्य और कृषि शिक्षा की विश्वसनीयता पर भी गंभीर सवाल भी खड़ा कर रहा है इसलिए आवश्यक है कि प्रवेश अभिलेखों, उत्तर-पुस्तिकाओं, फीस के विवरण और पाठ्यक्रमों की मान्यता की निष्पक्ष जाँच कराई जाए तथा उसके निष्कर्ष सार्वजनिक किए जाएँ। कृषि शिक्षा में किसी भी प्रकार की लापरवाही या अनियमितता को केवल प्रशासनिक चूक मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसका सीधा असर कृषि क्षेत्र के भविष्य और किसानों को वैज्ञानिक मार्गदर्शन देने वाले भावी विशेषज्ञों की गुणवत्ता पर पड़ता है।

समस्या की जड़ केवल कॉलेजों की संख्या बढ़ना नहीं, बल्कि उनकी शैक्षणिक तैयारी और निगरानी में संभावित कमियाँ हैं। कृषि शिक्षा में केवल कक्षाएँ और परीक्षा पर्याप्त नहीं हैं। विद्यार्थियों को मिट्टी की जाँच, फसल उत्पादन, कीट एवं रोग प्रबंधन, सिंचाई, उर्वरक उपयोग और अनुसंधान की व्यावहारिक जानकारी चाहिए। इसके लिए योग्य शिक्षक, सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय और पर्याप्त कृषि फार्म अनिवार्य हैं। यदि किसी संस्थान में इन सुविधाओं का अभाव है, तो उसकी डिग्री विद्यार्थी को वास्तविक दक्षता कैसे देगी?

कृषि महाविद्यालय खोलने में भूमि की उपलब्धता विशेष महत्त्व रखती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने नए कृषि महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं से संबंधित दिशा-निर्देश जारी किए हैं। परिषद के पाँचवीं डीन समिति से संबंधित पुराने मानकों में मैदानी क्षेत्रों के लिए 30 हेक्टेयर, अर्थात लगभग 74 एकड़ भूमि का प्रावधान था। दूसरी ओर, के संशोधित मॉडल अधिनियम 2023 को पंजाब में अपनाने के संदर्भ में 120 विद्यार्थियों की एक इकाई के लिए 37.5 एकड़ भूमि और 19 एकड़ कृषि फार्म का प्रावधान बताया गया है। इन दोनों प्रावधानों को अलग-अलग संदर्भों में समझना आवश्यक है; किसी एक मानक को सभी संस्थानों पर स्वत: लागू अनिवार्य कानून मान लेना उचित नहीं होगा। राजस्थान में भी स्पष्ट किया जाना चाहिए कि प्रत्येक श्रेणी के संस्थान पर कौन-से मानक लागू हैं और उनका पालन कैसे सुनिश्चित किया जाता है।

इस अनियमितता का सबसे बड़ा खामियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ सकता है। किसान परिवार का एक युवा लाखों रुपये खर्च कर बी.एससी. कृषि की पढ़ाई करता है। उसका सपना कृषि पर्यवेक्षक, कृषि अधिकारी, बैंक अधिकारी या कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में काम करने का होता है। बाद में यदि उसे पता चले कि उसके संस्थान की संबद्धता, पाठ्यक्रम की मान्यता या डिग्री की स्वीकार्यता में समस्या है, तो उसका समय, पैसा और भविष्य दाँव पर लग जाता है। इसलिए प्रवेश लेने से पहले विद्यार्थियों को संस्थान की वैध संबद्धता, पाठ्यक्रम की मान्यता और संबंधित भर्ती नियमों में डिग्री की स्वीकार्यता की जाँच करने का अवसर मिलना चाहिए। संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे मान्यता की स्थिति के बारे में विद्यार्थियों को स्पष्ट और सही जानकारी दें।

लेकिन कृषि शिक्षा के संकट का दूसरा पहलू भी उतना ही गंभीर है। राजस्थान के पाँचों सरकारी कृषि विश्वविद्यालयों में शिक्षण पदों की भारी रिक्तियों की समस्या बार-बार समाचारों में उठाई गई है। यदि विश्वविद्यालयों में लगभग 80 प्रतिशत शिक्षण पद खाली होने का आँकड़ा आधिकारिक रूप से पुष्ट होता है, तो यह अपने आप में चिंताजनक स्थिति है। जिन सरकारी विश्वविद्यालयों से कृषि वैज्ञानिक, शिक्षक और अनुसंधानकर्ता तैयार होने चाहिए, उनमें ही पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध न हों, तो कृषि शिक्षा की गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित होगी? निजी कॉलेजों पर सख्ती आवश्यक है, लेकिन सरकारी विश्वविद्यालयों में रिक्त पद भरना भी सरकार की उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी है। कृषि शिक्षा के सुधार का अर्थ केवल कमजोर निजी संस्थानों पर कार्रवाई करना नहीं, बल्कि पूरे शैक्षिणक तंत्र को मजबूत बनाना है।

प्रस्तावित एग्रीकल्चर काउंसिल इस दिशा में उपयोगी साबित हो सकती है, बशर्ते उसका गठन स्पष्ट कानूनी अधिकारों, पारदर्शी प्रक्रियाओं और जवाबदेही के साथ हो। उसे कॉलेजों की शैक्षिणक सुविधाओं, शिक्षक संख्या, भूमि, प्रयोगशालाओं और प्रायोगिक प्रशिक्षण का नियमित मूल्यांकन सुनिश्चित करना चाहिए। मानकों का उल्लंघन पाए जाने पर निष्पक्ष जाँच के बाद उचित कार्रवाई हो। साथ ही, विद्यार्थियों को शिकायत दर्ज कराने और अपनी डिठी की मान्यता की जानकारी प्राप्त करने की प्रभावी व्यवस्था मिले। राजस्थान सरकार को भी निजी कृषि महाविद्यालयों की संबद्धता और अनापत्ति प्रमाणपत्र की स्थिति सार्वजनिक करनी चाहिए तथा नियमों का उल्लंघन करने वाले संस्थानों पर नियमानुसार कार्रवाई करनी चाहिए।

कृषि शिक्षा कोई ऐसा व्यवसाय नहीं है जिसमें केवल भवन बनाकर और फीस लेकर डिठियाँ बाँट दी जाएँ। यह देश की खाद्य सुरक्षा, किसानों की आय, मिट्टी की उर्वरता और कृषि के भविष्य से जुड़ा विषय है। जिस प्रकार चिकित्सा शिक्षा में प्रशिक्षित चिकित्सक तैयार करने के लिए मानकों का पालन जरूरी है, उसी प्रकार कृषि शिक्षा में भी वैज्ञानिक दक्षता और व्यावहारिक प्रशिक्षण अनिवार्य हैं।

शिवराज सिंह चौहान की घोषणा से सुधार की उम्मीद जगी है। अब असली परीक्षा उसके क्रियान्वयन की होगी। केंद्र और राज्य सरकारों को निजी कृषि महाविद्यालयों की अनियमितताओं पर रोक लगाने के साथ सरकारी कृषि विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करनी होगी। नियम सभी पर समान रूप से लागू हों और विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा मिले जो उन्हें वास्तविक ज्ञान और कौशल प्रदान करे।

राजस्थान को कागजों पर कृषि स्नातक तैयार करने वाली व्यवस्था नहीं, बल्कि खेतों की समस्याएँ समझने वाले योग्य कृषि वैज्ञानिक चाहिए। डिग्री की खेती पर लगाम तभी लगेगी, जब कृषि शिक्षा में गुणवत्ता, पारदर्शिता और जवाबदेही की वास्तविक फसल उगेगी।

–प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंठालिया, पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक, उदयपुर

लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण और सही मताधिकार : कांग्रेस का इलेक्टोरल यू-टर्न



डॉ. सौम्या गुर्जर

लोकतंत्र की मजबूती स्वच्छ मतदाता सूची, निष्पक्ष चुनाव और प्रत्येक नागरिक के मताधिकार की सुरक्षा से तय होती है। विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर इसी उद्देश्य से महत्वपूर्ण है। लेकिन जब मतदाता सूची को दुरुस्त करने की प्रक्रिया पर ही कांग्रेस स्वार्थवश सवाल उठा रही है, तो सवाल उठता है कि क्या राजनीतिक सुविधा के लिए लोकतांत्रिक सिद्धांतों को भी बदला जा सकता है?

लगभग पिछले एक दशक से चुनावों में बार-बार जनाधार खो रही कांठोस आज देश में भ्रम के जरिए अराजकता फैलाने का प्रयास कर रही है। भीड़तंत्र के सहारे भ्रम फैलाया जा रहा है। इनके पास न तो देश के लिए कोई रोडमैप है और न ही देश के विकास की कोई स्पष्ट तस्वीर। वहीं भाजपा का विजन स्पष्ट है – विकसित भारत 2047। कांग्रेस इसमें बाधा डालने का काम कर रही है। कांग्रेस का एक ही विजन है- भीड़तंत्र के सहारे राहुल गांधी को किसी भी तरह नेता बनाना। इसके लिए चाहे नवयुवाओं को भ्रमित कर देश में अराजकता फैलाने का काम ही क्यों न करना पड़े। कांग्रेस देश के सर्वोच्च न्यायालय और चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं पर भी आरोप लगा रही है।

आप समझिए, आज से 10 साल पहले दादाजी का निधन हो गया, लेकिन हर बार मतदाता सूची में दादाजी का नाम आता है और दादाजी वोट भी डाल जाते हैं। ऐसा ही दृश्य अमिताभ बच्चन की फिल्म 'भूतनाथ' में दर्शाया गया है। तो क्या ऐसी मतदाता सूची को सही कराना गलत है? क्या किसी मृत व्यक्ति का नाम रिकॉर्ड में बने रहना लोकतंत्र के लिए सही होगा? मतदाता सूची का पुनरीक्षण किसी दल का राजनीतिक एजेंडा नहीं, बल्कि लोकतंत्र में चुनावी व्यवस्था की बुनियादी जरूरत है।

एसआईआर के मामले में तो कांठोस का दोहरापन भी गजब का है। सत्ता में रही तो एसआईआर का समर्थन, जनाधार खोने पर विरोध। पहले ईवीएम को दोष देते थे। जब वह आरोप काम नहीं आया, तो अब एसआईआर को निशाना बनाया जा रहा है। वर्ष 2018 में आंध्र प्रदेश में कांग्रेस के डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी ने मांग की थी कि आंध्र प्रदेश की मतदाता सूची में लगभग 50 लाख नाम डुप्लीकेट हैं और इन्हें हटाया जाना चाहिए। 2026 में एसआईआर के दौरान 44.28 लाख नाम हटाए गए। इसी तरह तेलंगाना में 70 लाख नामों को लेकर सवाल उठाए गए थे, जबकि 2026 में 73.39 लाख नाम हटाए गए। कांग्रेस के नेता वर्ष 2018 में कहते थे कि अगर डुप्लीकेट और मृत मतदाताओं के नाम नहीं हटाए गए, तो यह लोकतंत्र के साथ धोखा होगा। अब जब एसआईआर के जरिए डुप्लीकेट और मृत मतदाताओं के नाम हटाए जा रहे हैं, तो विरोध क्यों?

इसी तरह राजस्थान में 15 अगस्त 2018 को कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया था कि 42 लाख नाम डुप्लीकेट हैं। इन्हें नहीं हटाया गया, तो यह लोकतंत्र के साथ धोखा होगा। एसआईआर के तहत लगभग 41.85 लाख नाम हटाए गए। केरल में तो कांग्रेस के एक नेता ने 4.34 लाख नाम हटाने के लिए एक वेबसाइट तक बना दी और हाई कोर्ट का रुख किया। एसआईआर हुई, तो 8.57 लाख डुप्लीकेट नाम पाए गए और उन्हें हटाया गया।

सुविधा के अनुसार राजनीति क्या होती है, यह केरल से समझा जा सकता है। केरल में एसआईआर हुई और नाम हटाए गए। कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनाई, तो कहा कि एसआईआर मददगार साबित हुई। कांग्रेस पार्टी ने आधिकारिक तौर पर एसआईआर की तारीफ की। कांग्रेस के रमेश चेन्नीथला ने कहा कि एसआईआर हुई, इसलिए हम जीते हैं। यानी राजनीतिक हित और अपनी सुविधा के लिए आप जब चाहें, किसी प्रक्रिया को सही बता दें और सत्ता नहीं मिले, तो उसी प्रक्रिया का विरोध करने लगें। कांग्रेस अपने राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए समय-समय पर अपनी ही बात बदलती रहती है। उसका दोहरापन यहां साफ दिखाई देता है।

बिहार में वर्ष 2013 में 76 लाख घोस्ट वोटर्स पाए गए थे। उस समय केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी। वर्ष 2025 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर एसआईआर के दौरान 65 लाख नाम हटाए गए। दिल्ली में वर्ष 2013 में ही कांग्रेस की सरकार के समय 13.58 लाख नाम हटाए गए थे। अब एसआईआर के दौरान 33 लाख नाम हटाए गए। वर्ष 2014 में महाराष्ट्र में 71.76 लाख नाम काटे गए और 74 लाख नाम जोड़े गए। इस बार भी एसआईआर के तहत 39 लाख नए नाम जोड़े गए हैं। बंगाल में एसआईआर के बाद फर्जी मताधिकार का प्रयोग करने वाले घुसपैठियों को बाहर का रास्ता दिखाया गया। बंगाल चुनाव से पहले राहुल गांधी ने कहा कि ममता बनर्जी ने उनका रास्ता नहीं रोका होता, तो भाजपा बंगाल में नहीं आती। बाद में कहा जाने लगा कि यह सब एसआईआर की वजह से हुआ है। गठबंधन के लोग आपस में ही लड़ने लगे। अब चुनावों में अपना जनाधार खोने के बाद यू-टर्न लेकर कहा जा रहा है कि यह सब एसआईआर और चुनाव आयोग का किया-धरा है।

24 अगस्त 2013 को दिल्ली में कांग्रेस के शासनकाल के दौरान 13.58 लाख नाम काटे गए, लेकिन भाजपा ने कभी इसे वोट चोरी या गलत प्रक्रिया नहीं बताया। 9 अगस्त 2013 को बिहार में 76 लाख मतदाताओं के नाम काटे जाने के बाद भी कांग्रेस पर इस तरह के आरोप नहीं लगाए गए। 27 अप्रैल 2014 को महाराष्ट्र में 71.76 लाख मतदाताओं के नाम काटे गए और 74 लाख नए मतदाता जोड़े गए, तब भी कोई विरोध नहीं हुआ। कांग्रेस की सरकार के दौरान भी 10 बार एसआईआर हुआ, लेकिन लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर इस तरह का विरोध नहीं जताया गया और न ही संवैधानिक संस्थाओं को निशाना बनाया गया। लेकिन चुनावों में जनाधार नहीं मिलने पर आत्ममंथन करने के बजाय लोकतंत्र की प्रक्रिया पर उंगली उठाना, देश में भ्रम फैलाना और अराजकता का माहौल बनाना कांठोस की राजनीति का हिस्सा बन गया है। एसआईआर का उद्देश्य मतदाता सूची की शुद्धता और चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता को मजबूत करना है। सही मताधिकार लोकतंत्र की आत्मा है और उसकी रक्षा राजनीतिक सुविधा से ऊपर होनी चाहिए। कांग्रेस को अपनी 'अच्छा-अच्छा गपागप, कड़वा-कड़वा थू-थू' की पॉलिसी छोड़कर राजनीति में शुचिता अपनानी होगी।

–डॉ. सौम्या गुर्जर, पूर्व महापौर, नगर निगम जयपुर

जोधपुर रेल मंडल में सतत जीवनशैली सप्ताह-2026 का शुभारंभ

जोधपुर, (कासं)। उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल में मंडल रेल में रविवार को सतत जीवनशैली सप्ताह-2026 का शुभारंभ किया गया। यह सप्ताह 1 से 7 नवंबर 2026 तक आयोजित किया जाएगा। इसके तहत मिशन लाइफ के अंतर्गत स्वस्थ एवं पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी के निर्देशन में इस अभियान के तहत जोधपुर मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों, ट्रेनों, रेलवे कॉलोनियों एवं कार्यालयों में रेलकर्मियों तथा यात्रियों को स्वच्छ एवं पौष्टिक आहार अपनाने, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने, आसपास सफाई रखने तथा रेलवे स्टेशनों, रेलगाड़ियों एवं रेलवे परिसरों को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान डिजिटल डिस्प्ले एवं सार्वजनिक

■ अभियान के तहत रेलकर्मियों तथा यात्रियों को स्वच्छता के लिये प्रेरित किया

उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से मिशन लाइफ से संबंधित जागरूकता संदेश प्रसारित किए गए। साथ ही रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन अधीक्षकों एवं मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षकों द्वारा पर्यावरण मित्रों के सहयोग से पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने की शपथ दिलाई गई। इसमें रेलवे कर्मचारियों के साथ यात्रियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

स्वस्थ शरीर एवं स्वच्छ पर्यावरण के महत्व को रेखांकित करते हुए विभिन्न स्टेशनों पर योगाभ्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इन गतिविधियों के माध्यम से रेलकर्मियों को मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने तथा पर्यावरण संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया गया। 3 जोधपुर मंडल के जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर, मेड़ता रोड, भगत की कोठी, डेगाना एवं सुजानगढ़ सहित प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। यह अभियान 7 नवंबर तक निरंतर जारी रहेगा। इस दौरान प्रतिदिन अलग-अलग विषयों पर जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 2 नवम्बर, 2026

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत-2083, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 3:46 तक, शुभ योग दिन 12:07 तक, कौलव करण दिन 1:11 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:46 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज शुक्र वाल्यत्व समाप्त प्रातः 8:50 पर होगा। महापात योग रात्रि 8:20 से रात्रि 12:35 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– अमृत सूर्योदय से 8:03 तक, शुभ 9:26 से 10:48 तक, चर 1:33 से 2:55 तक, लाभ-अमृत 2:55 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 7:30 से 9:00 तक, सूर्योदय 6:41, सूर्यास्त 5:40

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रह